ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-10* November- 2017
Innovation The Research Concept

मन में... बसते हैं लोक देवता (छिंदवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में)

लक्ष्मीकान्त चंदेला
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग,
शासकीय स्वशासी
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
छिंदवाड़ा, म0प्र0

टीकमणि पटवारी
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय स्वशासी
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
छिंदवाड़ा, म0प्र0

सारांश

जिस तरह लोक अनन्त है उसी तरह लोक के देवता भी। हमारे लोक देवताओं का मान–मनुव्वल 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन्ह तैंसी' की तरह है। सचमुच लोक अपने मानस में घटना, चमत्कार और कारणों के आधार पर जैसी कल्पना करता है वैसी माटी, लकड़ी, पत्थर आदि में चित्र उकेरकर हार–पहार, नरवा–झोड़ी, घर–अंगना–परछी, खेर–खूंट–मेड़ो –डांड़ो आदि में स्थापित कर मनाता–तपाता है तथा लोक जीवन को सुरक्षा प्रदान करता है। इस तरह लोक स्वयं जीवन का सच्चा सौन्दर्य रचता हुआ मन में... बसाता है अपने लोक देवताओं को, और 'एक घड़ी, आधी घड़ी...' भजता–धजता है श्रम–साध्य जीवन में। ऐसी अनूठी है लोक देवताओं की अर्चन–अनुष्ठान विधि।

मुख्य शब्द : लोक, मनःचेतना, देव, जीवन और सौन्दर्य।

प्रस्तावना

'पाहन पूजैं हरि मिलें, तो मैं पूजूँ पहार।' कबीर की इस कठोर वाणी के बावजूद लोक कंठ में हम सबने यह सुना ही है कि 'पत्थर–पत्थर में बसे हैं भगवान'। आशय है सर्वव्यापी सत्ता अर्थात् ईश्वर का वास कण–कण में हैं, देवता का वास भी उनको भजने वालों के हृदय में विराट् छवि लेकर विराजमान हैं; लेकिन लोक देवता कण–कण और हृदय में विराट् छवि लेकर नहीं, बल्कि मन में बसते हैं, तन में बसते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि लोक मन की अंतःचेतना को गहरे से समझते हुए तुलसीदास लिखते हैं– 'जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।' सचमुच लोक अपने श्रम–सौन्दर्य में जिस आकृति का निर्माण हृदय में करता है, वही उसका देवता होता है, आराध्य होता है। जिसकी आराधना में इतना तल्लीन हो जाता है कि कभी माटी में, तो कभी लकड़ी में; कभी पत्थरों में, तो कभी दीवारों में; अपने देवता की छवि उकेरता है। माटी, लकड़ी, पत्थर और दीवार में उकेरी गई मूरत जब लोक विपदा का हरण करती, उनके मनोरथ पूर्ण करती है तब ये धीरे–धीरे समाज में संकट–मोचक के रूप में रूढ़ होते जाते हैं और कालान्तर में सार्वभौम हो समाज स्वीकृत होते हैं, तब प्रतीक रूप में लोक देवता की पदवी प्राप्त कर लोक मानस में स्थापित हो जाते हैं।

लोक मानस (मन) में ये लोक देवता वेद–पुराण–उपनिषद्–धर्म ग्रंथ आदि से नहीं आते। ये तो लोक में ही बनते हैं और बस जाते हैं सदा–सदा के लिए लोक मानस में, लोक चेतना में। स्थापित हो जाते हैं लोक की माटी से, 'खेत में, खलिहान में, तालाब में, अंगना में, परछी में, देहरी में, चूल्हा में, चकिया में, मूसर में, कोंड़ा में, खेर में, खूंट में, मेड़ों में, लोक मन में, तब जाकर निर्धारित हो पाता है लोक और उसका जीवन–सौन्दर्य।

अब प्रश्न उठता है कि लोक देवताओं की उत्पत्ति और आराधना क्यों? दूसरा, लोक देवता लकड़ी, पत्थर और माटी में ही क्यों? तीसरा, लोक इनकी आराधना कर क्यों सुरक्षित महसूस करता है? इन सभी प्रश्नों का सीधा–सा उत्तर है कि जब लोक खेत में अथवा जंगल–पहार में काम कर रहा हो या जीवकोपार्जन के निमित्त श्रमरत् हो और अचानक दैवीय या प्राकृतिक आपदा–विपदा आये जिसका तुरंत समाधान अपने आस–पास से ही कर लेना चाहता है। इसी आषा से खेत की मेड़ में, हार–पहार में या उसके आस–पास जो भी उपादान दिखाई देता है उसी में अपने आराध्य को देखता है, संभवतः यही विश्वास उसे श्रद्धावान बनाता है। दूसरा, प्रकृति के वह सबसे करीब है, प्रकृति ही उसकी पालक–पोषक है जिससे प्रकृति में अपने संकट–मोचक इष्टदेव की परिकल्पना करता है।

पुनश्च प्रश्न उठता है कि लोक देवताओं की पूजन विधि कैसी है? स्पष्ट है लोक में इनकी पूजा–पाठ की विधि अलग और विशिष्ट होती है पर 'जितना जानता है उतना मानता है।' लोक अपने लोकदेवताओं की अर्चन–अनुष्ठान विधि न तो शास्त्रों में ढूँढ़ता और न ही पोथियों में; वह श्रम–साध्य परम्परा का निर्वहन करते हुए स्वयं तय करता है और लोक मर्यादा में सिद्धि साधना करता रहता है। तुलसीदास लोकमानस की इस स्वयं सिद्ध परम्परा से प्रभावित हो कहते हैं– ''एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी के पुनि आध। तुलसी चर्चा राम की कटें कोटि अपराध।'' सूत्रतः लोक देवता श्रम आधारित पूजन–विधि के साथ चर्चा भर कर लेने से प्रसन्न हो जाते हैं तथा सदैव लोक के निकट रहते हैं। इस तरह लोक भजता–धजता है, पूजता–सुमरता है। लोक का महत्वपूर्ण दृष्टांत है जिसे कार्य प्रारंभ करने से पूर्व लोक अपने देवता का अवगाहन करता हुआ कहता है–

'मैं हवा बाँधता हूँ ,पानी बाँधता हूँ ,
धरती बाँधता हूँ
आकाश बाँधता हूँ
नौ जंगल
दस दिषा बाँधता हूँ
लाख पशु–परेवा,
सवा लाख जड़ी–बूटी बाँधता हूँ।
नौ लाख चुड़ैल,
दस लाख भूत बाँधता हूँ ,
तीनों लोकों के ठाकुर देव बाँधता हूँ ,
दरहा और नसान बाँधता हूँ।
कौन बाँधता है?
गुरु महादनिया–महादेव बाँधते हैं,
कौन बाँधता है?
पाट देवता–सरना माई बाँधती है,
मैं उनका भगत बाँधता हूँ।
चाहे सूखे गोबर के उपलें उड़ जाएँ,
पशु उड़ जाएँ, पेड़ उड़ जाएँ,
पत्थर और पहाड़ उड़ जाएँ,
पर मेरे शब्द न खाली जाएँ।

(रणेन्द्र : ग्लोबल गाँव के देवता)

ये लोक मन की सच्ची साधना है और सच्चे लोक देव भी, जिनके बल पर अपनी आन–बान–षान को बनाए रखने की चाहत रखता है। कुछ भी हो जाये पर अपना श्रम–सौन्दर्य धूमिल न हो, गांव की सुरक्षा में चूक न हो जाए इसके लिए अपने परिवेश से ही लोकदेव की कल्पना करते हैं, मन में मूर्ति बनाते हैं, रचते–रचाते हैं, बनाते–मनाते हैं और मनोरथ पूर्ति के लिए यत्न करते हैं। कालान्तर में यही लोककहानी, लोकगाथा, लोक कथाएँ, दंतकथाओं–मिथकों में परिवर्तित हो परम्परा बन जाते हैं। इस प्रकार की संकल्पानाओं से ही लोक अपने जीवन में सौन्दर्य की कल्पना करता है। जिसे लोक अध्येता यदा–कदा लोक–जीवन कहता है। एक खास तरह का लोक जीवन जहाँ सत्ता और शासक, न्याय और परम्पराएँ अलग–अलग नहीं होती क्योंकि इन सबके लोक देव एक ही होते हैं। इसीलिए जीवन में भिन्नता नही, बल्कि समानता का भाव दिखाई देता है।

अब देखिए, छिंदवाड़ा जिले के लोक मानस में बसे लोक देवता। जिस प्रकार लोक अन्नत है उसी प्रकार लोक देवता भी। यहां के लोक देवताओं की उत्पत्ति भी घटना, चमत्कार और कारणों के आधार पर हुई है तथा आज भी साक्षात् और चमत्कारिक माने जाते हैं। देखिए, चमत्कारिक लोक देव–

चलनी देव

छिंदवाड़ा के ग्रामीण लोक में बेहद पूजे जाने वाला देव चलनी देव है। चलनी का आषय है चलता हुआ या चलने लगे। चलनी देव का नामकरण भी इसी आधार पर किया गया है। लोक बिल्कुल साक्षात् देवता मानता है। लोक में ऐसी मान्यता है कि यदि किसी के शरीर में चटक से संबंधित बीमारी हो जाती है तो वह इस स्थान पर जाता है और अगर उसे ऐसा कुछ है तो चलनी देव के स्थान में दोनों हाथ रखते ही देवशक्ति से हाथ आगे की ओर चलने लगते हैं और बीमारी ठीक हो जाती है। ऐसी मानता रखने वाले सभी जाते हैं और ठीक भी हो जाते हैं। ठीक होने के उपरांत पूजा–पाठ के लिए पान–फूल–नीबू–नारियल चढ़ाया जाता है। कोई कथा–पूजन करता है तो कोई जवारे बोता है। यह देव स्थान मोहखेड़ ब्लॉक के ग्राम रजाड़ा में स्थित है।

माल देव

'मालदेव' को अलग–अलग क्षेत्र में अलग–अलग नामों से जाना जाता है। छिंदवाड़ा में इसे माल देव कहते

हैं जबकि सिवनी जिला में इसे 'मालबाबा' या 'मालबाबा खीलामुठिया' कहते हैं। लोक में ऐसी मानता है जो गाय पालता है और दूध का उत्पादन करता है वह मालदेव को मनाता–तपाता है। ताकि गाय अच्छी बियाय–पजाय एवं दूध भी अच्छा दे और उसका बछड़ा भी स्वस्थ रहे। इसलिए गाय पालने वाले इस देवता को मनाते हैं। मालदेव को सभी लोग चाहे वह किसी धर्म या जाति का हो उसकी पूजा करते हैं। इसकी कथा काफी पुरानी है। मालदेव को मानने वाले बताते हैं कि हर साल या तीन साल में एक बार पान–फूल या मुर्गा–तितरी, बकरा–बकरी आदि की बली जाती है। मालदेव का स्थान कहीं गांव के बाहर, तो कहीं जंगल में होता है तथा प्रतीक रूप में पेड़, पत्थर या मिट्टी से स्थान बनाया जाता है।

भैंसासुर

भैंसासुर दो शब्दों से मिलकर बनता है – भैंसा और सुर या भैंस और असुर यानि भैंसा के स्वस्थ रहने या उनकी बीमारी से निवारण के लिए जिस देवता को मनाया जाता है उसे भैंसासुर कहते हैं। यदि इस अर्थ में देखे तो पता चलता है कि इसे लोक क्यों मनाता है। इस देवता की पूजा पूरा लोक करता यानि जो भी भैंसा का पालन करता है वे सब इस देवता की पूजा करते हैं। अधिकांशतः इसे भैंस पालने वाले एवं भैंस से दुग्ध उत्पादन करने वाले मनाते हैं। बताया जाता है कि भैंसासुर का स्थान गांव के बाहर होता है तथा साल में एक बार पान फूल से पूजा की जाती है। कुछ लोग बली भी देते हैं। सालोंसाल पुरानी परम्परा के अनुसार कोई साल में एक बार पान–फूल या बली देता है तो कोई तिसाला (तीन साल) में एक बार पान–फूल या बली चढ़ाता है। यह लोक देवता भी बहुत चमत्कारित होता है। मनाने वाले बताते हैं कि तुरन्त फल दिखाता है। प्रतीक रूप में एक पत्थर या काल्पनिक रूप में भी पूजा की जाती है। छिंदवाड़ा जिले में पूरा लोक मनाता है।

दैंय्यत बाबा

दैंय्यत बाबा को खेती–किसानी के लिए जागरत देवता माना जाता है। लोक खेती व फसलों में किसी प्रकार की बीमारी न हो तथा उपज अच्छी हो इसके लिए दैंय्यत बाबा से अरज–बिनती करता है। लोकदेव दैंय्यत बाबा का स्थान हार–पहार या खेत में होता है। प्रतीक रूप में खेत में पत्थर का स्थान होता या माटी के उभरे हुए स्थान पर छपाई कर बनाया जाता है। पूजा–पाठ से पहले लिपाई–पुताई की जाती है तत्पश्चात् पूजा की जाती। इस स्थान में मन्नतें भी की जाती है। फसल पानी पकने के बाद काटते समयय फसल की पहली मुट्ठी दैंयत को चढ़ायी जाती है साथ ही पान–फूल भी चढ़ाया जाता है; कभी कभार मुर्गा–तितरी, या अन्य पंखेरू की बली भी दी जाती है। लोक, इस देवता को अलग–अलग धर्मो, जातियों के आधार पर अलग–अलग परम्परा से मनाया जाता है। छिंदवाड़ा के समस्त ग्रामीण क्षेत्र में दैंयत बाबा की पूजा की जाती है

पटेलबाबा

यह गांव का चमत्कारिक लोक देवता है। हर गांव में इनका स्थान होता है जहां गांव के सभी लोग पूजा–पाठ करते हैं। गांव के ये ही पटेल होते हैं बाकी सब प्रजा। लोक में विश्वास है कि प्रजा की देखभाल इन्हीं के हाथों में होती है। इसलिए हर प्रकार की कठिनाइयों में इनकी पूजा–अर्चना की जाती है। पटेल बाबा प्रतीक रूप में एक स्थान पर पत्थर की प्रतिमा होती या मिट्टी की छपाई कर बना दिया जाता है। लोक में ऐसी मान्यता है कि गांव की सुरक्षा पटेल बाबा ही करते हैं। ऐसी दंतकथा है कि पटेल बाबा अपने सफेद रंग के घोड़े में सवार होकर गांव की परिक्रमा करते हुए उसकी रक्षा करते हैं। गांव में किसी भी प्रकार की आपदा, फसलों में रोग–जंजाल तथा पशु–पक्षियों में किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं आती है और अगर आ भी जाए तो उन्हीं की कृपा से ठीक हो जाता है। छिंदवाड़ा जिले का पूरा लोक पटेल बाबा को मनाता है। ग्राम रजाड़ा ब्लॉक मोहखेड़ में पटेल बाबा लगभग 16–17 फुट के अखंड पत्थर के ऊंचे स्तम्भ के रूप में विराजित हैं। इसकी उत्पत्ति परम्परा से मानी गई है। खेती बाड़ी, घरेलू या पारम्परिक कार्य के प्रारंभ में पटेल बाबा के स्थान में जाकर पूजा–पाठ करते है। मन्नत करते हैं तो पूरी होती है। पूजा–पाठ में पान–फूल चढ़ाया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

श्रमसाध्य जीवन निर्वाह करते हुए मनुष्य सुख से जी लेने की कोशिश करता है लेकिन कभी–कभी दैवीय या प्राकृतिक आपदाएँ उसे संकट में डाल देती हैं तब त्वरित रक्षा–सुरक्षा व संकट से बचने के लिए अपने आस–पास ही संकट मोचक की कल्पना कर मनाने–तपाने लगता है। इस तरह प्रकृति के जिस रूप की उपासना से लोक अपने को सुरक्षित पाता है, वही उसका अराध्यदेव होता है।

महत्त्व

लोक जीवन में सुख–सौन्दर्य की विविधता ही निराली होती है। जहाँ अपने जीवन को रचाता–बसाता है तथा आने वाले संकटों से निदान के लिए कहीं दूर न जाकर अपने आस–पास ही संकट मोचक खोजता है। इसी विश्वास से माटी, लकड़ी और पत्थर के देवों की कल्पना करता हुआ आराधना करता है और पीड़ामुक्त हो जाता है। लोक देवताओं का महत्व इसलिए भी है कि लोक जिस रूप में कष्टों का निवारण चाहता है उसी रूप में उसके दुःख दूर होते हैं तथा अनुष्ठान विधि की ऐसी कल्पना करता है जिसे लोक और देवता दोनों स्वीकार करते हैं। कालान्तर में यही परम्परा रूढ़ होकर सार्वभौम हो जाती है जिसे सारा लोक, पूरे सौन्दर्य के साथ मनाता–तपाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छिंदवाड़ा जिले के लोक मन में विराजे साक्षात् एवं चमत्कारिक चलनीदेव, मालदेव, भैंसासुर, दैंय्यत बाबा, पटेल बाबा आदि लोकदेवता निश्चित क्षेत्र, स्थान और काल विषेष के होते हुए भी पूरे समय और समाज के हैं। लोक मन इन्हें जितना जानता है उतना ही मानता है। ये किसी जाति–धर्म–सम्प्रदाय–संस्कृति के नहीं होते; बल्कि पूरे लोक के होते हैं। पूरा लोक चाहे वह किसी भी जाति–धर्म–पंथ का हो उन्हें मनाता–तपाता है। यही कारण है कि छिंदवाड़ा जिले के ये लोकदेवता लोक मन... में गहरे से बसे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *पीयूष दईया : लोक, भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर राजस्थान,313001 प्रथम संस्करण 2002*
2. *लेखक डॉ.आरती दुबे, संपादक डॉ.त्रिभुवननाथ शुक्लः बुंदेली साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् भोपाल– 462003 संस्करण 2011*
3. *डॉ.बापूराव देसाई : लोक साहित्य, विनय प्रकाशन, 70 पशुपति नगर, नौबस्ता कानपुर – 208021, प्रथम संस्करण 1996*
4. *डॉ.सत्येन्द्र : लोक साहित्य विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल एंड कं.प्रा.लि. दिल्ली, आगरा, जयपुर, संस्करण 1962*